मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।

मो. क. गांधी

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
नई दिल्ली

जीवन-क्रम

1869: जन्म 2 अक्तूबर, पोरबन्दर, काठियावाड़ में – माता पुतलीबाई, पिता करमचन्द गांधी।

1876: परिवार राजकोट आ गया, प्राइमरी स्कूल में अध्ययन, कस्तूरबाई से सगाई।

1883: कस्तूरबाई से विवाह।

1888: सितम्बर में वकालत पढ़ने इंग्लैण्ड रवाना।

1891: पढ़ाई पूरी कर देश लौटे, माता पुतलीबाई का निधन, बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की।

1893: भारतीय फर्म के लिये केस लड़ने दक्षिण अफ्रीका रवाना हुए। वहाँ उन्हें सभी प्रकार के रंग भेद का सामना करना पड़ा।

1894: रंगभेद का सामना, वहीं रहकर समाज कार्य तथा वकालत करने का फैसला – नेटाल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की।

1899: ब्रिटिश सेना के लिये बोअर युद्ध में भारतीय एम्बुलेन्स सेवा तैयार की।

1904: 'इण्डियन ओपिनियन' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया।

1906: 'जुलू विद्रोह' के दौरान भारतीय एम्बुलेन्स सेवा तैयार की – आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। एशियाटिक ऑर्डिनेन्स के विरूद्ध जोहान्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरम्भ किया।

1907: 'ब्लैक एक्ट'– भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों के ज़बरदस्ती पंजीकरण के विरूद्ध सत्याग्रह।

1908: सत्याग्रह के लिये जोहान्सबर्ग में प्रथम बार कारावास दण्ड आन्दोलन जारी रहा तथा द्वितीय सत्याग्रह में पंजीकरण प्रमाणपत्र जलाए गए। पुनः कारावास दण्ड मिला।

1909: जून – भारतीयों का पक्ष रखने इंग्लैण्ड रवाना। नवम्बर – दक्षिण अफ्रीका वापसी के समय जहाज में 'हिन्द–स्वराज' लिखी।

1910: मई – जोहान्सबर्ग के निकट टॉल्स्टॉय फार्म की स्थापना।

1913: रंगभेद तथा दमनकारी नीतियों के विरूद्ध सत्याग्रह जारी रखा – 'द ग्रेट मार्च' का नेतृत्व किया जिसमें 2000 भारतीय खदान कर्मियों ने न्यूकासल से नेटाल तक की पदयात्रा की।

1915: 21 वर्षों के प्रवास के बाद जनवरी में स्वदेश लौटे। मई में कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की।

1916: फरवरी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उद्घाटन भाषण।

1917: बिहार में चम्पारण सत्याग्रह का नेतृत्व।

1918: अहमदाबाद में मिल मज़दूरों के लिये सत्याग्रह –खेड़ा सत्याग्रह

1919: रॉलेट बिल पास हुआ जिसमें भारतीयों के आम अधिकार छीने गए – विरोध में उन्होंने पहला अखिल भारतीय सत्याग्रह छेड़ा,

1920: अखिल भारतीय होमरूल लीग के अध्यक्ष निर्वाचित हुए – कैसर–ए–हिन्द पदक लौटाया – द्वितीय राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन

1921: बम्बई में विदेशी वस्त्रों की होली। साम्प्रदायिक हिंसा के विरुद्ध बम्बई में 5 दिन का उपवास।

1922: चौरी–चौरा की हिंसक घटना के बाद जन–आन्दोलन वापस। उनपर राजद्रोह का मुकदमा चला छः वर्ष कारावास का दण्ड।

1924: साम्प्रदायिक एकता के लिये 21 दिन का उपवास रखा – बेलगांव कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए।

1928: कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया–पूर्ण स्वराज का आह्वान।

1929: लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया।

1930: ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह – साबरमती से दांडी तक की यात्रा का नेतृत्व।

1931: गांधी इरविन समझौता – द्वितीय गोलमेज़ परिषद के लिये इंग्लैण्ड यात्रा

1932: यरवदा जेल में अस्पृश्यों के लिये अलग चुनावी क्षेत्र के विरोध में उपवास।

1933: देशव्यापी अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन छेड़ा।

1934: अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना

1936: सेवाग्राम आश्रम, वर्धा की स्थापना।

1937: अस्पृश्यता निवारण अभियान के दौरान दक्षिण भारत की यात्रा।

1938: बादशाह ख़ान के साथ एन. डब्ल्यू. एफ. पी. का दौरा।

1940: व्यक्तिगत सत्याग्रह की घोषणा – विनोबा भावे को उन्होंने पहला व्यक्तिगत सत्याग्रही चुना।

1942: क्रिप्स मिशन की असफलता
– भारत छोड़ो आन्दोलन का राष्ट्रव्यापी आह्वान
– उनके नेतृत्व में अन्तिम राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह।
– पूना के आगाखाँ महल में बन्दी जहाँ सचिव एवं मित्र महादेव देसाई का निधन हुआ।

1944: 22 फरवरी – आगा खाँ महल में कस्तूरबा का 62 वर्ष के विवाहित जीवन के पश्चात् 74 वर्ष की आयु में निधन।

1946: ब्रिटिश कैबिनेट मिशन से भेंट – पूर्वी बंगाल के 49 गाँवों की शान्तियात्रा जहाँ साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़की हुई थी।

1947: – साम्प्रदायिक शान्ति के लिये बिहार यात्रा।
– देश के स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त 1947 को कलकत्ता में दंगे शान्त करने के लिये उपवास तथा प्रार्थना
– 9 सितम्बर 1947 को दिल्ली में साम्प्रदायिक आग से झुलसे जनमानस को सांत्वना देने पहुँचे।

1948: – जीवन का अन्तिम उपवास 13 जनवरी से 5 दिनों तक दिल्ली के बिड़ला हाउस में
– 20 जनवरी 1948 को बिड़ला हाउस में प्रार्थना सभा में विस्फोट।
– 30 जनवरी को नाथूराम गोडसे द्वारा शाम की प्रार्थना के लिये जाते समय बिड़ला हाउस में हत्या।

पिता – करमचन्द उत्तमचन्द गांधी

माता – पुतलीबाई

बचपन

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। मोहनदास पुतलीबाई और करमचंद गांधी के तीन बेटों में सबसे छोटे थे। अपनी मां की पवित्र प्रकृति और पिता की सच्चरित्रता ने मोहनदास के मन पर अमिट छाप छोड़ी। गांधीजी के प्रारंभिक जीवन पर राजा हरिश्चंद्र के जीवन पर खेले गये नाटक ने बहुत प्रभाव डाला-जिसमें राजा हरिश्चंद्र अनेक कठिनाईयां झेलने के बाद भी सत्य पर अड़िग रहे। बालक मोहन अपने लिए इससे कम की आकांक्षा नहीं रखते थे। उनकी दाई रम्भा ने भी उनमें 'रामनाम' की शक्ति में दृढ़ विश्वास प्रत्यारोपित कर दिया था।

पोरबन्दर स्थित 'कीर्तिमन्दिर'

महात्मा गांधी - 7 वर्ष की आयु में

राजकोट विद्यालय

किशोर मोहनदास मित्र के साथ

किशोर मोहनदास भाई के साथ

रलियतबेन (गांधी जी की बहन)

कस्तूरबाई

किशोर मोहनदास

पोरबंदर के प्राथमिक विद्यालय और बाद में अल्बर्ट हाई स्कूल, राजकोट, में बालक मोहन दास ने कोई विशेष प्रतिभा नहीं दिखाई। खेल में उनकी कोई रूचि नहीं थी तथा वे अपने में ही रहना पसंद करते थे। वे अपनी पाठ्य पुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों में कम ही रूचि रखते थे। यद्यपि वे अपने शिक्षकों का सम्मान करते थे, लेकिन फिर भी, उनके कहने पर भी उन्होंने साथी बच्चों से नकल नहीं की।

करमचंद का घर, राजकोट

डॉ. दोराबजी एदुल्जी जिमि, प्रिंसिपल

अल्फ्रेड हाई स्कूल, राजकोट

मात्र तेरह वर्ष की आयु में कस्तूरबाई से उनका विवाह लगभग खेल ही था। किशोर मोहनदास ने अपना वैवाहिक जीवन एक ईर्ष्यालु एवं स्वामिगत पति के रूप में शुरू किया। वे अपनी निरक्षर पत्नी को एक आदर्श पत्नी बनाना चाहते थे। अन्य व्यक्ति जिसके वे सबसे अधिक नज़दीक थे, वह था उनका बड़ा भाई –लक्ष्मीदास। उनके पिता की मृत्योपरांत वे लक्ष्मीदास ही थे जिन्होंने मोहनदास को शिक्षा दिलाने में मदद की और वकालत की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजा।

Katty war High-school

CERTIFICATE of AGE, to be signed by Parent or Guardian.

I hereby certify that Mondas Karamchand was born on the Vad 12 day of Bhadurva in the year 1925 St. and consequently that his age is this day (inclusive) 11 years 2 months and 2 days.

Date 1st December 1880
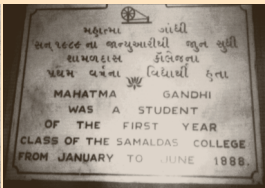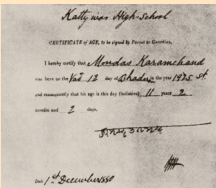
लंदन में

मावजी दवे - परिवार के मित्र

गांधी परिवार के मित्र और सलाहकार मावजी दवे की सलाह पर भाई लक्ष्मीदास बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए मोहनदास को लंदन भेजने के लिए सहमत हो गए। माता पुतलीबाई ने युवा मोहनदास को इंग्लैंड जाने की सहमती तभी दी जब उन्होंने मांस, मदिरा और परस्त्री से दूर रहने का संकल्प लिया। कुछ समय के लिए मोहनदास अंग्रेज़ी वेशभूषा और व्यवहार की ओर आकर्षित हुये। परंतु जल्दी ही वे सरल जीवन जीने की ओर लौट गये। यद्यपि वे पारम्परिक तौर पर शाकाहारी थे पर जल्दी ही वे शाकाहार में दृढ़ विश्वास भी करने लगे। वे लंदन में शाकाहार समाज से जुड़ गये। लंदन प्रवास के दौरान जूनागढ़ के वकील त्र्यंबक राय और काठियावाड़ के डॉ. प्राणजीवन मेहता से उनकी गहरी दोस्ती हो गई। यह दोस्ती भविष्य में उनके लिये वरदान स्वरूप बनी।
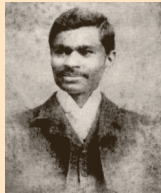
डॉ. प्राणजीवन मेहता

शाकाहार समाज की सदस्यों के साथ लंदन में गांधी जी।

त्र्यंबक राय मजुमदार

''मैंने अपनी परीक्षा उत्तीर्ण की और 10 जून, 1891 से मैं बैरिस्टर कहलाया गया। दिनांक 11 को उच्च न्यायालय में अपना नाम दर्ज कराया और 12 जून को मैं घर के लिए रवाना हुआ। मैं अपने आपको वकालत करने के योग्य नहीं महसूस कर रहा था।
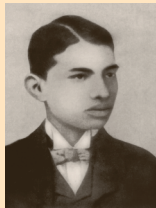
लंदन में विद्यार्थी

सत्याग्रह का जन्म

मोहनदास करमचंद गांधीजी अपने पुराने पारिवारिक मित्र दादा अब्दुल्ला सेठ के कहने पर राजकोट से डरबन, दक्षिण अफ्रीका गए। उनका उद्देश्य मुकदमा जीतना और आजीविका के लिए काम करना था। वे मई 1893 में दक्षिण अफ्रीका पहुंचे। वहां उन्होंने पाया कि समाज रंग-जाति-धर्म और पेशे से विभाजित था। अंग्रेज़ भारतीयों को "कुली" या "सामी" कहते थे।

प्रारंभ में ही उन्हें एक दुभार्ग्यपूर्ण घटना का शिकार होना पड़ा जिससे उनके युवा मन को चोट पहुंची और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में एशियन लोगों की बदहाली को सामने लाने का निश्चय किया।

अपनी आत्मकथा में गांधीजी ने ट्रेन यात्रा के दौरान दक्षिण अफ्रीका में हुई घटना का उल्लेख किया है। 7 जून 1893 की सर्द-रात्रि में उन्हें अपमानित कर ट्रेन के डिब्बे से बाहर धक्का दे दिया गया था। यह घटना उनके जीवन की एक निर्णायक मोड़ बनी। उनकी ग़लती यह थी कि उन्होंने "केवल गोरों" के लिए आरक्षित डिब्बे से निकलने के लिए मना कर दिया था। बाद में गांधी जी ने लिखा है:
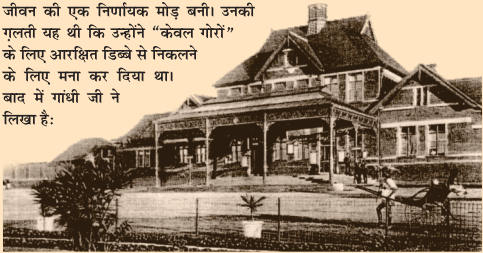
"मैं अपने जीवन के लिए डरा हुआ था। मैंने अंधेरे प्रतीक्षा-कक्ष में प्रवेश किया। कक्ष में एक श्वेत आदमी बैठा था। मैं उससे डर गया। मैंने स्वयं से प्रश्न किया - मेरा कर्तव्य क्या था? क्या मुझे वापस भारत लौट जाना चाहिए या ईश्वर पर भरोसा रखते हुए मुझे आगे बढ़ना चाहिए या उन्होंने मेरे लिए जो तय किया हुआ है उसका सामना करना चाहिए। मैंने वहां रहने और जूझने का फैसला किया। उसी दिन से मेरी अहिंसा सक्रिय हुई। उस सर्द रात्रि में एक सत्याग्रही का जन्म हुआ।"

सत्याग्रही गांधी

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी के कार्यों एवं अनुभवों को भविष्य में उनकी भूमिका की तैयारी के रूप में देखा जा सकता है। रंगभेद का सामना करते हुए उन्होंने अपने अंदर एक आध्यात्मिक जागृति की अनुभूति प्राप्त की। मानवीय-संबंधों में अपनी धारणा में वे अभूतपूर्व परिवर्तन लाए। दक्षिण अफ्रीका में ही उन्होंने अपने सबसे शक्तिशाली हथियार "सत्याग्रह" के शस्त्र को विकसित किया। यही एक मात्र वह 'शस्त्र' था जिससे दुनिया भर से लाखों दीन लोगों को समानता की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा मिली। वास्तव में, दक्षिण-अफ्रीका ही उनके सत्य और अहिंसा के प्रयोगों का जन्म स्थान था।
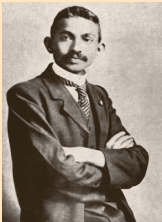
बैरिस्टर गांधी (1906)

श्लेसिन एवं कैलनबैक के साथ वकील गांधी (1913)

गांधीजी ट्रांस्वाल जेल (1908)

दक्षिण अफ्रीका
विभिन्न विचारधाराओं का संगम

1904 में गांधी जी ने डरबन से कुछ मील दूर एक उल्लेखनीय कार्य की शुरूआत की। एक रेल-यात्रा के दौरान उन्होंने जॉन रस्किन की 'अन्टू दिस लास्ट' (Unto this last) को पढ़ा। इस किताब में किसान-जीवन के साधारण जीवन का उल्लेख है। इससे गांधी जी प्रभावित हुए तथा उन्होंने दो महिने के अन्दर 'फिनिक्स सेटलमेंट' की स्थापना की। यह सेटलमेंट वैकल्पिक आहार, उपवास, प्राकृतिक आपदा और चिकित्सा, मृत्तिका-उबटन से मालिश और, सूर्य की किरणों से इलाज एवं पारंपरिक हस्तशिल्प की एक पूरी श्रृंखला का अनुभव क्षेत्र बनी। आवासियों में भारतीय एवं योरोपीयन शाकाहारी शामिल थे जो गांधी जी के दिशानिर्देश में कार्यरत थे। फिनिक्स में ही उन्होंने अपने प्रथम अख़बर 'इंडियन ओपिनियन' का संपादन और प्रकाशन किया। यह सामुदायिक बस्ती व्यवस्था उनके अनेक प्रयोगों का पहला चरण था।

गांधी जी ने 1910 में एक और नई बस्ती 'टॉल-स्टॉय' फार्म की स्थापना की। इस कार्य के लिए एक जर्मन यहूदी वास्तुकार डॉ. हरमन कैलेनबैक ने गांधी जी को जोहान्सबर्ग के पास 1,100 एकड़ जमीन दान दी। आगे चलकर इसमें आहार, शिक्षा समुदाय और सादा जीवन के आदर्शो को अपनाया गया। टॉलस्टॉय फार्म गांधी जी के स्वतंत्रता और सामाजिक पुनर्निमाण के विचारों की दर्शिका थी। अपने इन विचारों को गांधी जी ने सर्वप्रथम 'हिंद स्वराज' और इंडियन होमरूल में उल्लेखित किया था। इंडियन होमरूल एक ऐसी पुस्तिका थी जिसमें उन्होंने पश्चिमी सभ्यता को भारतीय तंत्र के लिए अस्वीकार किया।

सर्वोदय के प्रेरणा स्त्रोत
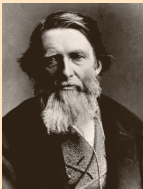
जॉन रस्किन (1819–1900)
'अन्टू दिस लास्ट'

मैं 'अन्टू दिस लॉस्ट' में निहित तथ्य के साथ हूँ। इस पुस्तक ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी है। हमें समाज के अंतिम व्यक्ति के विषय में सोचना चाहिये। हम सभी को समान मौका प्राप्त होना चाहिये प्रत्येक मानव को उसके आध्यात्मिक विकास के लिए बराबर संभावनाएँ प्राप्त होनी चाहिए।

लियो टॉलस्टॉय

...और तब गांधी आए!

...और तब गांधी आए! वे एक ताज़ी हवा के उस प्रबल प्रवाह की तरह थे, जिसने हमारे लिए पूरी तरह फैलना और गहरी सांस लेना संभव बनाया। वे रोशनी की उस किरण की तरह थे, जो अंधकार में पैठ गई और जिसने हमारी आंखों के सामने से परदे को हटा दिया। वह उस बवंडर की तरह थे, जिसने बहुत-सी चीज़ों को, ख़ासतौर से लोगों के दिमाग़ को उलट-पुलट दिया। वे कहीं आसमान से नहीं टपके थे। बल्कि भारत के करोड़ों लोगों के बीच से ही उभर कर सामने आए थे। वे हम में ही से एक थे। आम लोगों की भाषा बोलते हुए वे सतत् हमारा ध्यान जनता की भयावह और दयनीय अवस्था की ओर आकर्षित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग, जो किसानों और मज़दूरों के शोषण पर गुज़र करते हो, उनकी पीठ से उतर जाओ; उस व्यवस्था को, जो ग़रीबी और तकलीफ़ की जड़ है, दूर करो।

1915 में स्वदेश वापसी पर गांधी जी और कस्तूरबा

....इस तरह मानो अचानक ही लोगों के ऊपर से डर का काला साया छट गया; यह नहीं कि वह पूरी तरह हटा दिया गया, लेकिन फिर भी एक बहुत बड़ी, एक हैरत-अंगेज़ हद तक तो हटा ही दिया गया।..... साथ ही वह मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया भी थी, जिसमें उस विदेशी राज्य के सामने लंबे अरसे से सिर झुकाये रखने पर शर्म महसूस हुई, जिसने हमें गिरा दिया था और जिसने हमारी बेइ़ज्ज़ती की थी। इसमें यह इरादा भी मिला हुआ था कि चाहे नतीजा कुछ भी हो, अब आगे सिर न झुकाया जाये।

जवाहर लाल नेहरु

सार्वजनिक स्वागत

दक्षिण अफ्रीका में अपने लोगों के सम्मान और मानवीय गरिमा के लिए सत्याग्रह के ज़रिए बहादुरी के साथ लड़ने वाले उस महान् व्यक्ति का भारत में पूरे जोश के साथ स्वागत किया गया। उन्होंने रेल के तृतीय वर्ग में सफर कर उत्तर और दक्षिण भारत की यात्रा

vgenkckn e ukxfjdk }kjk y tkr g;] 1916

'kkfUrfudru e dfo jfcUnzukFk Bkdj d lkFk

की। 1915 में वापस आने पर गांधी जी एक ऐसे केंद्र की स्थापना करने के लिए उत्सुक थे जिसमें दक्षिण अफ्रीका से आए उनके सहकर्मी रह सकें। देश के विभिन्न हिस्सों से उन्हें आश्रम खोलने का आमंत्रण मिला परंतु उन्होंने कोचरब में आश्रम स्थापित करने का फैसला लिया। उसी वर्ष प्लेग फैल जाने की वजह से उन्हें कोचरब छोड़ना पड़ा और 7 किलोमीटर दूर साबरमती नदी के किनारे उन्होंने साबरमती आश्रम की स्थापना की।

dkpjc] vgenkckn e lkFke vkJe ¼1R;kxzg vkJe½] 1915

Lkkcjerh vkJe] 1915

भारत में सत्याग्रह का प्रयोग

सत्याग्रही गांधी

यदि दक्षिण अफ्रीका में रेलवे टिकट कलेक्टर ने सत्याग्रही गांधी को जन्म दिया तो भारत में चम्पारण के एक ग़रीब किसान - राजकुमार शुक्ल ने सत्याग्रह की शक्ति को परखने के लिये मंच प्रदान किया।
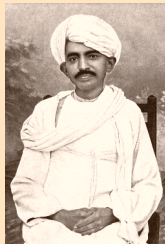
18 अप्रैल 1917 को गांधी जी ने चम्पारण, बिहार में किसानों के हक़ के लिये सत्याग्रह की शुरूआत की। 1918 में अहमदाबाद के कपड़ा मिल मज़दूरों के लिये आवाज़ उठाई। अहमदाबाद में ही उन्होंने मिल मालिकों की अन्तरात्मा को जगाने के लिये पहली बार 'उपवास' की नैतिक शक्ति का प्रयोग किया। इसके बाद उन्होंने किसानों के हितार्थ खेड़ा सत्याग्रह की शुरूआत की।
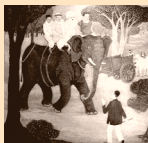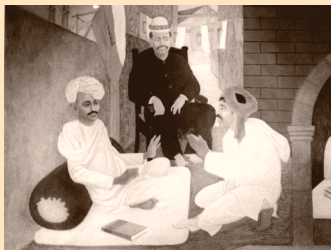
नील की खेती करने वाले किसानों पर अमानवीय अत्याचार

भारतीय राजनीति में गांधी युग की शुरूआत

भारत में अंग्रेज़ों द्वारा चलाया गया दमन चक्र ज़ोरों पर था। रॉलेट एक्ट, मार्शल लॉ और जलियांवाला बाग हत्याकांड इस दमन चक्र बाहरी अभिव्यक्ति थे।

1921 में, गांधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाया। इसके दो उद्देश्य थे पंजाब और ख़िलाफत अत्याचारों का निवारण तथा स्वदेशी, चरखा और खादी, हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता का निवारण, स्त्री-उद्धार आदि कार्यक्रमों द्वारा स्वराज की स्थापना। गांधी जी इन कार्यक्रमों को स्वराज स्थापना के स्तम्भ मानते थे। मध्यम वर्ग द्वारा संरक्षण प्राप्त विदेशी समानों और शैक्षिक संस्थानों के बहिष्कार का गांधी जी ने राष्ट्रव्यापी आह्वाहन किया। गांधी मानते थे कि मध्यम वर्ग ही भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की रीढ़ था।

फरवरी 1922 में चौरी-चौरा में हुई हिंसा ने पूरे भारत को स्तब्ध कर दिया। गांधी जी ने जन-आंदोलन को निलंबित कर दिया। उन्हें 10 मार्च, 1922 को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें सरकार के विरूद्ध प्रचार करने के लिए छह साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। 5 फरवरी 1924 को अपनी रिहाई पर गांधी जी हिंदू-मुस्लिम के बीच बढ़ती खाई से बहुत आहत हुए। स्वराज का तात्पर्य ही हिंदू-मुस्लिम एकता है। 18 सितम्बर 1924 से वह 21 दिन के लिए आत्मशुद्धि के लिए उपवास पर चले गए। उसी वर्ष बेलगांव सम्मेलन में उन्हें वर्ष 1925 के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधयक्ष चुना गया।

वर्ष 1925 में गांधी जी ने व्यापक रूप से भारत का संपूर्ण दौरा किया। वर्ष 1926 को गांधी जी ने राजनीति से दूर रहे।

MASSACRE OF JALLIANWALA BAGH

PUBLIC MEETING

AND

BONFIRE OF FOREIGN CLOTHES

Will take place at the Maidan near Elphinstone Mills . . Opp. Elphinstone Road Station . . .

On SUNDAY the 9th Inst. at 6-30 P. M.

When the Resolution of the Karachi Khilafat Conference and another Congratulating Ali Brothers and others will be passed.

All are requested to attend in Swadeshi Clothes of Khadi. Those who have not yet given away their Foreign Clothes are requested to send them to their respective Ward Congress Committees for inclusion in the GREAT BONFIRE.

ऐतिहासिक मार्च और नमक सत्याग्रह

सक्रिय राजनीति से अल्पकालीन सन्यास लेने के बाद गांधी जी ने फिर से राष्ट्रीय आन्दोलन की कमान संभाली। 26 जनवरी, 1930 को उन्होंने 'पूर्ण स्वराज' की प्रतिज्ञा लेने की घोषणा की और नमक कानून तोड़ने के द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरूआत करने का फैसला किया। 12 मार्च, 1930 को पूरे देश का नेतृत्व करते हुये, गांधी जी साबरमती आश्रम से चले और 6 अप्रैल, 1930 को दांडी के समुद्र तट पर नमक कानून को चुनौती दी। असंख्य अनुयायियों के साथ गांधी जी को गिरफ्तार किया गया।
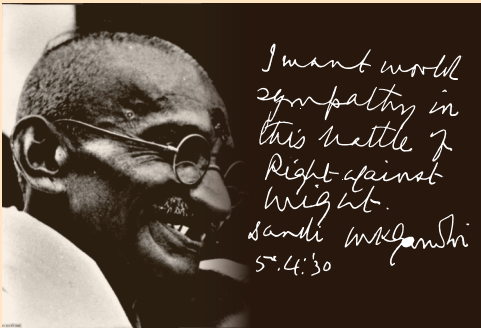
ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा – 1930

सरोजिनी नायडू के साथ गांधीजी
5 अप्रैल, 1930

पंडित मदन मोहन मालवीय तथा सरोजिनी नायडू के साथ, विक्टोरिया बन्दर, 1931

द्वितीय गोल मेज़ सम्मलेन

भारत के भविष्य की स्थिति से संबंधित संवैधानिक समस्याओं पर विचार करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में एक गोल मेज़ सम्मलेन के आयोजन की घोषणा की। गांधी जी ने पहले गोल मेज़ अधिवेशन का बहिष्कार किया लेकिन दूसरे में शामिल हो गये। लेकिन जैसे कि अंदेशा था - वे "ख़ाली हाथ" लौटे। अपने लंदन प्रवास के दौरान अन्य लोगों के अलावा वे फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं लेखक रोमां रोलां से भी मिले। वापस लौटने पर उन्होंने एक बार फिर से सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया। उन्हें गिरफ्तार किया गया और पूना की यरवदा जेल भेज दिया गया।

पण्डित मदन मोहन मालवीय, सरोजिनी नायडू और कस्तूरबा गांधी जी के साथ, लंदन

रोमां रोला के साथ, स्विटज़रलैण्ड

लंकाशायर कपड़ा मिल को जाते हुए

विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार से आर्थिक क्षति होने पर भी मिल की सभी महिला कर्मियों ने भारत के कपड़ा मज़दूरों की परिस्थित पर सहानुभूति व्यक्त की।

दूसरी गोलमेज़ बैठक में, लन्दन, 1931

इटली में स्काउट बालकों के साथ – 1931

रचनात्मक कार्यक्रम
अर्थ एवं संदर्भ

रचनात्मक कार्यक्रम के ज़रिए उन्होंने पहले भारत के लिये और बाद में संपूर्ण मानव जाति के लिये एजेंडा तय किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से वे जिस तरह का समाज बनाना चाहते थे - उसकी व्यापक दृष्टि प्रस्तुत की। यह मनुष्य के आंतरिक परिवर्तन की मूल योजना थी जो क्रमशः समाज में परिवर्तन लायेगी।

वस्तुतः गांधी जी 'रचनात्मक' कार्यक्रम के माध्यम से स्वतंत्रोत्तर भारत के लोगों को तैयार कर रहे थे।

'रचनात्मक कार्यक्रम' को और भी उपयुक्त रूप से कहा जा सकता है -सत्य और अहिंसात्मक तरीके से 'पूर्ण स्वराज' या 'पूर्ण स्वतंत्रता' की संरचना करना. मुझे विश्वास है कि यदि हम रचनात्मक कार्यक्रम के विभिन्न विषयों को कार्यरूप देने में असफल होंगे या अधूरे मन से करेंगे - उसी अनुपात में हमें स्वराज मिलने में देरी होगी. बिना आत्म-शुद्धि के अहिंसा से स्वराज मिलना नामुमकिन है। इसके लिये निम्नलिखित मुद्दों पर विश्वास आवश्यक है।'

- साम्प्रदायिक एकता
- अस्पृश्यता उन्मूलन
- मद्य निषेध
- खादी
- अन्य ग्रामीण उद्योग
- स्वच्छता
- बुनियादी शिक्षा
- प्रौढ़ शिक्षा
- स्त्री उद्धार
- सेहत एवं शारीरिक स्वच्छता के लिये शिक्षा
- क्षेत्रीय भाषायें
- राष्ट्र भाषा
- किसान
- मज़दूर
- आदिवासी
- कुष्ठरोगी
- विद्यार्थी

करो या मरो

1942 में गांधी जी ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन का सूत्रपात किया। 8 अगस्त, 1942 को बंबई के गोवालिया टैंक मैदान में गांधी जी ने देश को 'करो या मरो' के लिये तैयार रहने के लिये आह्वान किया। अंग्रेज़ सरकार ने गांधी जी और अन्य नेताओं को प्रातः तड़के ही चुपचाप गिरफ़्तार करके पूना में आग़ा खान महल में नज़रबंद कर दिया।
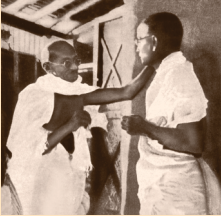
प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही–विनोबा भावे

कस्तूरबा और गांधी जी के सचिव महादेव देसाई को भी जल्दी ही गांधी जी के पास भेज दिया गया। इस नज़रबंदी के दौरान ही 15 अगस्त, 1942 को गांधी जी के लंबे समय से सहयोगी महादेव देसाई का निधन हो गया। 22 फरवरी, 1944 को जीवन संगिनी कस्तूरबा स्वर्ग सिधार गईं।

भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेती महिलाएं
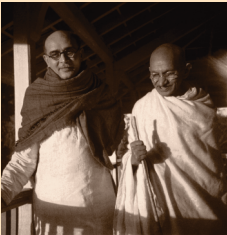
महादेव देसाई के साथ

कस्तूरबा के पार्थिव अवशेष

जो दो कभी वापस नहीं लौटे

उपमहाद्वीप का विभाजन और स्वतंत्र भारत का जन्म

5 मई, 1944 को जब गांधीजी जेल से बाहर आए तो उन्होंने पाया कि "साम्प्रदायिक एकता" का उनका स्वपन बिखरा पड़ा है। भारत में हिंसा का ज्वालामुखी धधक रहा था।

ब्रिटिश कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच हुए पेचीदे समझौते के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। परंतु इसके एवज में बंटवारा तथा साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो गए।

BHOGILAL HIRALAL SHAH & CO., BOMBAY

Founder: Pherozeshah Mehta   Editor: Syed Abdullah Brelvi

P. SHAH & CO.

VOL. XXVII NO. 239   BOMBAY: TUESDAY, OCTOBER 10, 1939   PRICE: ONE ANNA

Declare India As Independent Nation

ongress Call To Britain

C. C. Debates Working Resolution

FORTIFICATION ON NEW REICH BORDER

SOVIET PROPOSALS TO LITHUANIA

Repatriation Of Germans From Baltic And Balkan Countries

FINLAND NOT TO BREAK AWAY FROM OSLO POWERS PACT

SOVIET RAW MATERIALS TO GERMANY

SOVIET ASSURANCE TO RUMANIA

FINNISH ENVOY TO MOSCOW

राष्ट्र के इतिहास में यह एक दुर्लभ घटना थी - एक ही साथ दो देशों का जन्म- भारत और पाकिस्तान। यह अब तक का सबसे ज़्यादा खूनी और अभिघातक बंटवारा था। यह एक ऐसा जन्म था जो संघर्ष और दु:ख से उत्पन्न हुआ था।

10 लाख शरणार्थी बने और लगभग एक लाख लोगों की पलक झपकते ही क्रूरतापूर्वक हत्या कर दी गई थी।

शांति दूत

"मैं हर एक आंख का आंसू पोंछना चाहता हूं।"

शहादत

हे राम
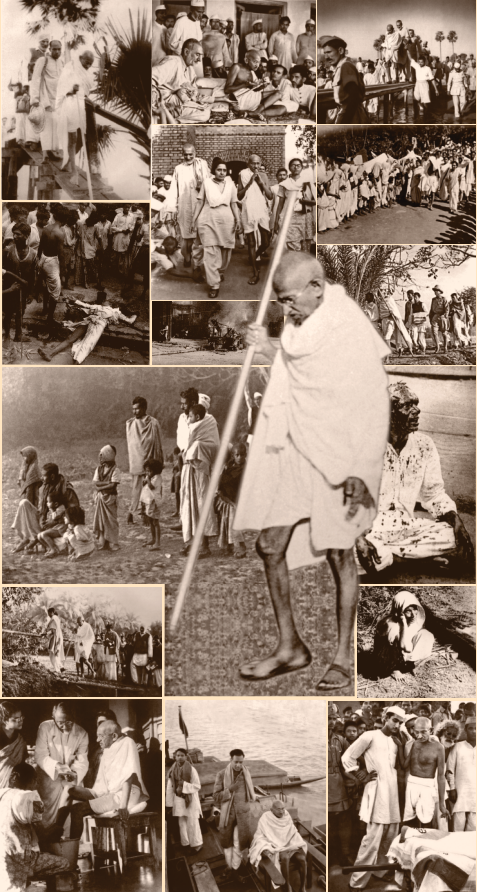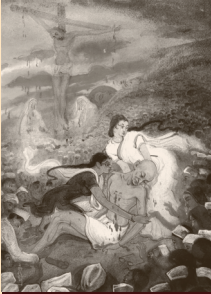
प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरु का राष्ट्र के नाम संदेश

30 जनवरी 1948

“दोस्तों और सहभागियों, हमारे जीवन से रोशनी लुप्त हो गई है और हर जगह अंधेरा छा गया है, मैं नहीं जानता मैं आप लोगों से क्या कहूँ और कैसे कहूँ, हमारे प्रिय नेता, हमारे ‘बापू’ जैसा हम उन्हें पुकारते थे, हमारे राष्ट्रपिता, अब नहीं रहे। शायद मैं गलत कह रहा हूँ। फिर भी, अब हम उन्हें वैसा कभी नहीं देख पाएंगे जैसा इतने बरसों से देखते आ रहे थे। अब हम दौड़कर उनके पास सलाह लेने, दिलासा लेने नहीं जा पाएंगे और यह एक गहरी चोट है, सिर्फ मेरे लिये ही नहीं बल्कि हमारे करोड़ों देशवासियों के लिये और इस गहरी पीड़ा को कम करना मेरे या किसी अन्य के द्वारा दी गई किसी भी सलाह से, मुश्किल है।

रोशनी चली गई है, मैंने कहा, परन्तु मैं ग़लत था। क्योंकि जो रोशनी इस देश को आलोकित कर रही थी वह कोई साधारण रोशनी नहीं थी। इस रोशनी ने इस देश को कई वर्षों तक प्रकाशित किया है और आने वाले सालों में भी प्रकाशित करती रहेगी, आज से हज़ार साल बाद भी यह रोशनी इस देश में दिखाई देती रहेगी और दुनिया भी इसे देखेगी, साथ ही यह अनगिनत दिलों को दिलासा देती रहेगी। क्योंकि यह रोशनी केवल वर्तमान की नहीं, बल्कि जीवित, शाश्वत सच की रोशनी है जो हमें हमेशा सही राह दिखाती है, ग़लतियों से बचाती है, इस प्राचीन देश को आज़ादी की ओर ले जाती है।

.... हमारी सबसे बड़ी प्रार्थना यह होनी चाहिये कि हम शपथ लें कि हम खुद को सच के लिये समर्पित करेंगे और उन सभी उद्देश्यों के लिये समर्पित होंगे जिनके लिये हमारे यह महान् देशवासी जिये और अपने प्राण दिये...”

बिड़ला हाउस (वर्तमान गांधी स्मृति) से प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का देश को सम्बोधन

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं. जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अह्म तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ:

जो सबसे ग़रीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा. क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अह्म समाप्त होता जा रहा है.

मो.क.गांधी

मेरे सपनों का भारत

मैं ऐसे संविधान की रचना करवाने का प्रयत्न करूंगा, जो भारत को हर तरह की गुलामी और परावलम्बन से मुक्त कर दे और उसे, आवश्यकता हो तो, पाप करने तक का अधिकार दे। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें ग़रीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि वह उनका देश है – जिसके निर्माण में उनकी आवाज़ का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करुंगा, जिसमें ऊंचे और नीचे के वर्गों का भेद नहीं होगा और जिसमें विविध सम्प्रदायों में पूरा मेलजोल होगा। ऐसे भारत में अस्पृश्यता या शराब और दूसरी नशीली चीज़ों के अभिशाप के लिये कोई स्थान नहीं हो सकता। उसमें स्त्रियों को वही अधिकार होंगें जो पुरुषों को होंगे। चूंकि, शेष सारी दुनिया के साथ हमारा सम्बन्ध शान्ति का होगा, यानि न तो हम किसी का शोषण करेंगे और न किसी के द्वारा अपना शोषण होने देंगे, इसलिये हमारी सेना छोटी से छोटी होगी। ऐसे सब हितों का, जिनका करोड़ों मूक लोगों के हितों से कोई विरोध नहीं है, पूरा सम्मान किया जाएगा, फिर वे हित देशी हों या विदेशी। अपने लिए मैं यह भी कह सकता हूँ कि मैं देशी और विदेशी के फ़र्क से नफ़रत करता हूँ। यह है मेरे सपनों का भारत...इसमें अंश मात्र की कमी से भी मुझे संतोष नहीं होगा।

मो. क. गांधी
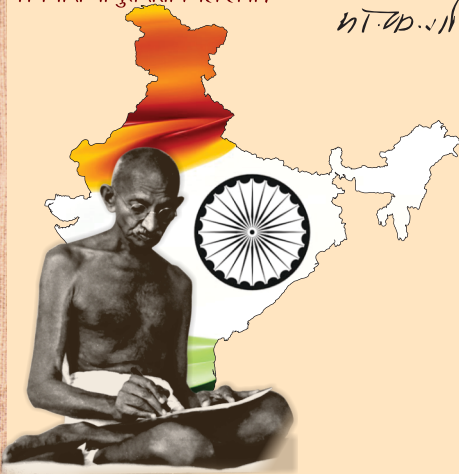
गांधी जी का मानवता को संदेश
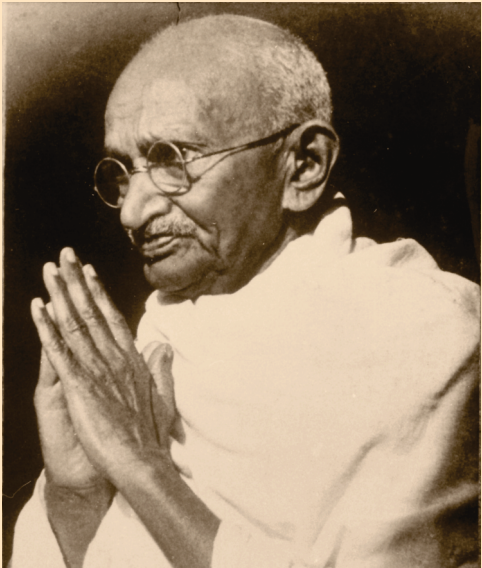
"मुझे लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि सत्य और अहिंसा के युग्म के बिना संपूर्ण मानवता का विनाश हो जायेगा। मुझे इससे तनिक भी भय नहीं है कि विश्व विपरीत दिशा की ओर जाता प्रतीत हो रहा है। जब पतंगा अपने विनाश की ओर बढ़ता है तो वह और तेज़ी से लौ के चारों ओर चक्कर लगाता है जब तक की वह जल न जाये। अपनी आख़री सांस तक यह मेरा धर्म है कि मैं भारत को और उसके द्वारा विश्व को इस नियति से बचाऊँ"

महात्मा गांधी की स्मृति में जारी डाक टिकट

"आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से विश्वास कर पाएंगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा व्यक्ति वास्तव में इस पृथ्वी पर विचरण करता था।"
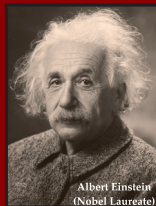
Albert Einstein
(Nobel Laureate)

"ज्ञान और विनम्रता से परिपूर्ण, अडिग इरादों से भरा हुआ, एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी सारी शक्ति अपने देशवासियों के उत्थान के लिए समर्पित की है; एक ऐसा व्यक्ति जिसने यूरोप की बर्बरता का साधारण मानव की शालीनता तथा आत्मसम्मान के साथ सामना किया है और हमेशा ही श्रेष्ठता प्राप्त की है।"

A. Einstein

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

एक परिचय

महात्मा गांधी ने अपने जीवन के अंतिम 144 दिन गांधी स्मृति, तत्कालीन बिड़ला भवन में बिताए, जहां वे 30 जनवरी 1948 को हत्यारे की गोलियों का शिकार हुए। यह स्थल स्वतंत्रता पूर्व भारत की ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बलिदान स्थल पर एक स्तंभ स्थित है जो की भारत की स्वतंत्रता के लिए गांधी जी की पीड़ा और लंबे संघर्ष को याद दिलाते हुए उनकी शहादत का प्रतीक है। इस भवन में स्थित संग्रहालय में गांधी जी द्वारा बिताए गए दिनों से जुड़े हुए छायाचित्र, मूर्तियां, रंगचित्र, भित्तिचित्र, शिलालेख आदि प्रदर्शित हैं। गांधीजी की कुछ निजी वस्तुएं भी विशाल भवन के छोर पर स्थित कमरे में-जहां वे रहते थे, ध्यान पूर्वक संरक्षित की गई हैं।

विस्तृत गांधी दर्शन परिसर महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी के अवसर पर 1969 को अस्तित्व में आया। 1984 में गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन का विलय हुआ। विश्व में गांधीजी के जीवन और मूल्यों पर सबसे बड़ी प्रदर्शनी होने के अलावा यह परिसर गांधीजी के शाश्वत संदेश को विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा कार्यान्वित करते हुए एक 'व्याख्या केंद्र' की तरह समाज के सभी वर्ग में गांधी जी के जीवन दर्शन का प्रचार प्रसार करता है।